विचाराधीन है और इस वक्त न्यायाधिकरण में मामला चल रहा है, तो इसमें कितना समय लगेगा सुलझाने में और उनकी मांगें क्या-क्या हैं तथा उनका फैसला कब तक होगा ?

श्री हाथी : अब विचाराधीन नहीं है । निर्णय भी कर दिया गया है और ट्राइब्यूनल को भेज दिया गया है । अब कोई विचार की बात नहीं है । जल्दी से जल्दी इसका फैसला भी आ जायेगा ।

श्री हुकम चन्द कछवाय : मैंने पूछा था कि जो ज्ञापन दिया है .....

श्री हाथी : जो झगड़ा है वह बोनस के लिये है ।

श्री हुकम चन्द कछवाय : इस के अलावा और भी मांगें तो थी ?

श्री हाथी : और मांगें मेरे पास नहीं हैं, वह वहां दी होंगी ।

Defects in Qutab Minar

\+

***1383. Shri Sharda Nand:**
Shri J. B. Singh:
Shri Ranjit Singh:

Will the Minister of **Education** be pleased to state:

(a) whether an Expert Committee appointed to go into the defects in the foundations of the Qutab Minar has recently submitted its report;

(b) whether the Committee have recommended further cementing of its foundations; and

(c) if so, whether Government propose to provide necessary funds for the purpose?

शिक्षा मन्त्रालय में राज्य मन्त्री (श्री शेर सिंह): (क) जी, हां ।

(ख) जी, हां ।

(ग) जैसे ही धनराशि उपलब्ध होगी ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : कहां से धन उपलब्ध होगा ?

श्री शेर सिंह : जहां से आप लोग मंजूर करेंगे ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : क्या आसमान की तरफ नजर रख कर मंत्री महोदय बैठे हैं ?

श्री शेर सिंह : आप लोग मंजूर करेंगे ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : सरकार यह बतलाये कि पैसे देने जा रही हैं या नहीं । पैसा मिलने पर कहने का क्या मतलब है ? अगर मांगेंगे तभी तो हम लोग देंगे ।

श्री शारदा नन्द : क्या मंत्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि जो समिति नियुक्त की गई थी उसने कितने दिनों में अपनी रिपोर्ट दी और उस पर कितना खर्च हुआ ?

श्री शेर सिंह : समिति जुलाई, 1964 में नियुक्त हुई और मई, 1965 में उसने अपनी रिपोर्ट दी । कितना खर्च हुआ इसके लिये मुझे नोटिस चाहिये ।

श्री शारदा नन्द : क्या सरकार इस पर जल्दी से जल्दी विचार करके इसको ठीक कराने का प्रयत्न करेगी ताकि दर्शकों को सुविधा हो सके ?

श्री शेर सिंह : अभी हमने इसके लिये 10 लाख 20 हजार रुपये का एस्टिमेट तैयार करवाया है । पहले इसकी बुनियाद जो कमजोर है उसको ठीक करने के लिये, इसमें सीमेंट भरने के लिये, फोल्डिंग एरेक्शन के लिए और ऊपर सारा मजबूत करके जो पत्थर खराब हो गये हैं उनकी जगह पर दुबारा अच्छे मजबूत पत्थर डालने के लिये, एस्टिमेट तैयार हो गया है, और जैसे ही पैसा मंजूर हो गया इस पर काम चालू हो जायेगा । मैं समझता हूं कि अगर जल्दी हुआ तो इस चले

वर्ष में आरम्भ हो जायेगा या फिर अगले वर्ष में जरूर आरम्भ हो जायेगा । इसमें केवल ऐसी बात है कि जितना रुपया इस वक्त है उसमें यह काम शुरू नहीं हो सकता है । असल में जब काम शुरू हो तो अच्छे ढंग से होना चाहिये । एक बार काम छोड़ दें तो काफी रुपया होना चाहिये । इसीलिये मैंने कहा कि धनराशि उपलब्ध होने पर काम शुरू होगा । काफी धनराशि उपलब्ध हो तभी काम को छेड़ना चाहिये ।

श्री हुकम चन्द कछवाय : कब होगा, कहां से होगा और कैसे होगा ?

श्री शेर सिंह : मैंने बतलाया कि 10 लाख 20 हजार रुपया का एस्टिमेट बनाया गया है और तीन फेसेज में यह काम होना है । पहले फेज में 1 लाख 20 हजार रु० खर्च होगा, दूसरे फेज में 5 लाख रुपया खर्च होगा और तीसरे फेज में 4 लाख रु० खर्च होगा । इस प्रकार से इसके लिये इस वक्त 10 लाख 20 हजार रुपये का एस्टिमेट तैयार हो गया है । पहली स्टेज के लिये जैसा मैंने बतलाया 1 लाख 20 हजार रुपया लगेंगे उसको ठीक प्रकार से चलाने के लिये ।

Shrimati Jyotsna Chanda: May I know whether the Government is aware that residential accommodation for students is not available in other cities?

Mr. Speaker: We are not on that question now.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : मैं जानना चाहता हूं कि कुतुब मीनार के शरीर को सम्भालने के साथ साथ कुतुबमीनार के इतिहास के सम्बन्ध में भी कुछ कार्य क्या किया जा रहा है—इतिहास वेत्ताओं में इसके सम्बन्ध में बड़ा मतभेद उत्पन्न हो गया है—ताकि इस शरीर के साथ साथ इस की आत्मा की रक्षा भी की जा सके । क्या इस के लिये कुछ रुपया मंत्री महोदय निर्धारित करेंगे ?

श्री शेर सिंह : अभी आत्मा की रक्षा का प्रश्न इस रूप में नहीं आया । शरीर की रक्षा के प्रश्न जरूर है और इस के लिये योजना बनाई गई है । माननीय सदस्य आत्मा की रक्षा के लिये कोई बात लायें तो हम वह भी करेंगे ।

Shri Chintamani Panigrahi: May we know when exactly this repair work would start—this year or next year? Can we know the date?

श्री शेर सिंह : जितनी जल्दी हो सकेगा करेंगे ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मंत्री जी ने कहा कि 1964 में कमेटी बनी और 1965 में उस ने रिपोर्ट दी । आज 1967 है । अभी तक मंत्रालय पहले फेज के लिये 1 लाख 20 हजार रुपये भी जमा नहीं कर सका है । मैं जानना चाहता हूं कि क्या शिक्षा मंत्रालय ने इस सम्बन्ध में कोई ठोस प्रस्ताव वित्त मंत्रालय के सामने रक्खा है ? क्या मैं यह समझूं कि वित्त मंत्रालय कुतुब मीनार को बनाये रखने के लिये शिक्षा मंत्रालय को 1 लाख 20 हजार रुपया भी देने को तैयार नहीं है ।

श्री शेर सिंह : हमारा विचार इस साल करने का था । लेकिन अभी केवल मरम्मत के काम के लिये 1 लाख 50 हजार रुपया इस बार मंजूर हुआ है, और इसमें बहुत सारे काम ऐसे हैं जिन के कमिटमैंट पहले से है जो पहले से चालू हैं । चालू कामों को हम छोड़ नहीं सकते । 13 छोटी छोटी योजनायें हैं जिन पर 1 लाख 50 हजार रु० मंजूर हुआ है और वह सबखर्च हो जायेगा इन चालू कामों को हम छोड़ नहीं सकते । जिन कामों के लिये पैसा मिला है उन को हम को पूरा करना पड़गा कि जो दूसरे काम चालू हैं उन को बीच में छोड़ कर दूसरे काम शुरु करने से तो सब अधूरे रह जायेंगे । इस से कोई लाभ नहीं है । इस लिये जो 1 लाख 50 हजार रुपया मिला है वह जो 13

छोटी छोटी योजनायें हैं उन के लिये रख दिया गया है । जिस समय और पैसा मिलेगा उस समय इस काम को भी हम ले लेंगे ।

Shri C. K. Bhattacharyya: Will the Minister kindly state whether the Qutub Minar is inclining to a side and if so to which side is it inclining? (*Interruptions*). The entire structure is inclining to northwest or southwest, it is stated. What is the degree of inclination till now.

Shri Sher Singh: Qutub Minar is also following a policy of non-alignment. It is neither to the left nor to the right. There is no inclination so far.

श्री मधु लिमये : कम से कम कुतुब मीनार खड़ा रहेगा बीच में ?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : जो अड़ होते हैं वे ही ऐसी नीति अपनाते हैं ।

Shri Tenneti Viswanatham: Apart from the question of the major repairs, I want to know whether the Government will pay a better attention to keep the surroundings of Qutab Minar neater and cleaner, to give the garden a better look and to make the canteen a ltle more presentable to the foreigners and also to the Indians who come from outside Delhi and have got a high notion about the Qutub Minar.

Shri Sher Singh: For encouraging tourism, the Ministry of Education is thinking of establishing a liaison with the Ministry of Tourism so that with the help and guidance of the other Ministry we could improve these monuments and make them more attractive for the tourists. (*Interruption*).

An hon. Member: That is not the reply to the question.

Shri Bal Raj Madhok: According to historical researches, this Qutub Minar was never built by Qutubuddin Aibak who ruled over Delhi only for four years, from 1612 to 1616, but it was built by Vishal Dev who ruled over Delhi for a long time. I would like to know whether, in view of this fact, and in view also of the fact that our motto is *Satyameva Jayate*, the Government will accept this fact, and name this tower as *Vishal Stamb* instead of Qutub Minar?

Shri Sher Singh: When it is established that *sat* is *sat* it is accepted.

Shri Bal Raj Madhok: Are you prepared to appoint a committee to go into the matter and find out the real man who built it? Here is a historical fact. If you do not accept it, then you could appoint a committee of scholars to go into the whole matter.

Shri Sher Singh: It is a matter for the historians and experts to decide. (*Interruption*). The Government is not in a position to make any declaration.

Shri Bal Raj Madhok: Are you prepared to form a committee of scholars to go into the whole question? Please say yes or no.

Mr. Speaker: Are you prepared or not prepared? One need not go into the merits.

Shri Sher Singh: We have got a committee which is writing the history of India.

श्री बलराज मधोक : इस स्तम्भ के बारे में कोई कमेटी नियुक्त करने को क्या आप तैयार हैं जो कि सारा जो एतिहासिक डाटा है उसको देख कर निर्णय करे कि इसे किसने बनाया था और उसके अनुसार इसका नाम रखा जाए ?

Shri Sher Singh: As I have already said, there is a committee headed by Dr. Tara Chand.

Mr. Speaker: For this purpose?

Shri Sher Singh: No. (*Interruption*)

Mr. Speaker: Then, for this question, please say yes or no for heaven's sake.

Shri Sher Singh: This matter could also be referred to that committee. There is no need to appoint another committee. The committee is there and this matter can be referred to that committee.

श्री सु० कु० तापड़िया : आपने इनका सवाल सुना होगा हां या न कहिये । क्या ब्रेन ड्रेन है वहां ।

शिक्षा के स्तर में सुधार

+

*1384. **श्री क० ना० तिवारी :**
श्री विभूति मिश्र :
श्री सिद्धेश्वर प्रसाद :
श्री मोलहू प्रसाद :
श्री शिवपूजन शास्त्री :
श्री रामचरण :

क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि 1950–51 से 1965–66 तक की अवधि में परीक्षा में उत्तीर्ण हुए विद्यार्थियों की संख्या की दृष्टि से शिक्षा के क्षेत्र में जो विस्तार हुआ है, उसके अनुपात में शिक्षा के स्तर मे सुधार नहीं हुआ है;

(ख) यदि हां, तो क्या उन्हें आशानुकूल सरकारी तथा गैर-सरकारी क्षेत्रों में रोजगार मिल रहा है; और

(ग) यदि नहीं, तो छात्रों की शिक्षा के स्तर में सुधार करने के लिये सरकार ने क्या कार्यवाही की है ?

The Minister of Education (Dr. Triguna Sen): (a) to (c). A statement is laid on the Table of the House. [*Placed in Library.* See No. LT-1203/67].

For the benefit of Members, may I say a few words?

Mr. Speaker: Yes.

Dr. Triguna Sen: Referring to part (a) of the question, the percentage of passes of students at various examinations shows an improvement over the last 15 years. But to my mind, this is no criterion of improvement or otherwise in educational standards. The overall picture about educational standards, I think, is a mixed one. On the one hand, there has been some increase in the sub-standard institutions due to rapid expansion accompanied by inadequate investment and resources. There has been also a big rise in the number of first generation learners. But there is also a brighter side to this picture. There has been a distinctive improvement in the teaching of several subjects such as natural sciences, agriculture, engineering, medicine, economics, sociology, etc. Good institutions and first-rate students are now more numerous and qualitatively also better. But due to expansion and lack of resources and teachers, there are also sub-standard institutions. It is a mixed one.

Regarding (b), I agree that in the first three five-year plans, the output of matriculates and graduates in arts and commerce has been very large and has outstripped the employment opportunities available. This has increased the volume of educated unemployment. Many students are under-employed, according to their qualifications.

Regarding (c), the improvement of educational standards depends on several factors, but the most important to my mind is that the student should be taught in the language in which he thinks and dreams. That depends also on the quality of teachers and motivation of students. A series of measures have been taken by the Ministry of Education, UGC and NCERT in this respect. The Education Commission also has made